षडंग

भारतीय इतिहास के झरोखे से हमें अपने भारतीय शिल्प के विविध मनमोहक रूप दिखाई देते हैं. उनमें प्रयुक्त प्राविधि व शैलीगत तत्वों के अनेक सन्दर्भों का भारतीय शिल्पशास्त्रों एवं साहित्य में उल्लेख मिलता है. सम्रांगणसूत्रधार, विष्णुधर्मोत्तर पुराण, शिल्प्रत्न आदि ग्रंथों में तथा संस्कृत साहित्य में भी अनेक महत्वपूर्ण कला सन्दर्भ मिलते हैं. षडंग भारतीय चित्रकला पद्धति की नियमावली में एक प्रमुख आधार स्तम्भ है. **कामसूत्र** नमक ग्रन्थ **वात्सायन** द्वारा लिखा गया. इस ग्रथ की टीका **जय मंगला** को **यशोधर पंडित** ने 11- 12वी शती में लिखा. इसी ग्रन्थ में षडंग के इस श्लोक का उल्लेख मिलता है. 1921 में अवनींद्र नाथ टैगोर ने **षडंग (six limbs of painting)** नाम से पुस्तक लिखी जिसमे षडंग का विस्तृत उल्लेख मिलता है. श्लोक इस प्रकार है-

रूपभेद: प्रमाणानि भाव लावण्ययोजनम

सदृश्य वर्णिकाभंग इति चित्र षडंगकम

1. रूपभेद-

कलाकार के चित्रभूमि पर अंकन प्रारंभ करते ही रूप का निर्माण भी प्रारंभ हो जाता है. वास्तव में रूप चित्र ताल का वह भाग होता है, जिसका एक निश्चित आकार व वर्ण होता है. यदि हम रूप का सृजन कर भी ले तब भी वाह आकर नही कहलायगा जब तक उसमें अर्थ का संचार न हो. विभिन परिस्थितयों में वास्तु का वास्तु से मानव का मानव से मनः स्थितियों में भेद पैदा होता है. इसी से चाक्षुष व मानस रूप में अंतर होता है. यही असली अभिव्यंजना है.

रूप का भेद छोटा बड़ा, गहरा हल्का, अलंकृत साधारण, सुर असुर, सज्जन दुर्जन, वृक्ष लता, वास्तु के रंग, पोत, आकार अर्थसार पर निर्भर करता है. रूपों में परस्पर संयोजन में भिन्नता से रूप के भेद का ज्ञान होता है. रोप का निर्माण तथा चित्र में विभिन्न रूपं का अलग –अलग संयोजन तभी संभव है, जब चित्रकार रूप अर्थ एवं रूप अर्थ में पारंगत हो.

2. प्रमाण-

प्रमाण को सम्बद्धता का सिद्धांत भी कहा जाता है. यह आकृतियों का माप या फैलाव तथा सभी आकृतियों का एक दुसरे से सम्बन्ध और आकृतियों, तान तथा वर्ण इत्यादि का चित्रभूमि से सम्बन्ध निश्चित करता है. रूप की प्रमाणहीनता की स्थिति में वह चित्र सौन्दर्यहीन हो जाता है. प्रमाण से विभिन्न हाव भाव बनते हैं. भीमकाय आकृति शक्ति का प्रदर्शन तो करती है, लेकिन सौन्दर्य प्रधान नही होती.

भारतीय कला मनीषियों ने प्रमाण को ताल, कार्य- प्रमाण या मनोत्पत्ति के नाम से भी संबोधित किया है. एक चित्रकार के लिए उचित प्रमाण के व्यवहार हेतु अपनी स्मरण शक्ति को विकसित करना अति आवश्यक है.

3. भाव-

भाव पैदा होता है जब चित्रकार के दिल से अभिव्यक्ति उमड़ती है और वह विषय के साथ जुड़ जाता है.

रूप के प्रमाणिक होने के साथ ही उसमें भावयुक्त सौंदर्य भी होना चाहिए. भाव है आकृति की भाव-भंगिमा, स्वाभाव, मनोभाव एवं व्यंग्य आदि. यह सत्य है की भाव ही निर्विकार चित्त में प्रथम संचलन (movment) प्रदान करता है. इसी की वजह से चित्र में रस की उत्पत्ति होती है. भाव व रस के सृजन के कारण ही भारतीय चित्र कृतियाँ संसार में सर्वश्रेष्ठ मानी जाती है. रस से परमानन्द की प्राप्ति होती है (रसौ वै सः) यही भारतीय चित्र की आत्मा है, सौन्दर्य.

4. लावण्य-

भारतीय चित्रों के लिए सौन्दर्य से उपयुक्त संज्ञा लावण्य है क्युकी यह आंतरिक भाव सौष्ठव का अभिव्यंजित रूप है. रूप, प्रमाण, भाव इन तीनो के होने पर भी रूप अर्थहीन हो सकता है. जैसे प्लास्टिक के मोती में ये तीनो हो सकते हैं पर दीप्ति नहीं हो सकती. चित्रकार अपने अनुभव व ज्ञान के आधार पर लावण्यमय चित्र रचने लगता है. अजंता के चित्रों में भाव सौंदर्य के साथ लावण्य की शोभा सर्वत्र व्याप्त है. रेखा व रंग जब आकृति में स्वयं ही जीवित हो उठे तो लावण्य की आभा प्रकाशित हो उठती है.

5. सदृश्य-

प्रमाणिक रूप को भाव-लावण्यपूर्ण बनाने में सदृश्य का बड़ा योगदान रहा है. सदृश्य का अर्थ होता है – चित्रित रूप (मानवाकृति) में प्रभाव एवं आदर्श की समष्टि हेतु अन्य वास्तु (प्रकृति) की रचना-आकार व स्वाभाव वाले विशेष गुण व आकृति का प्रतीकात्मक अनुकृति का सौंदर्य योग करना, जैसे मछली के जैसी आँखे. सदृश्य का भाव चित्रकार के मन में होता है, क्युकी वह बहुत सी अमूर्त भावनाओं को मूर्त रूप प्रदान करता है. जब भी कलाकार किसी रूप का सृजन करता है तो वह प्राकृतिक व स्वाभाविक नहीं रह जाता है, इसलिए **स्वरुप** शब्द का प्रयोग होता है.

जैसे- तोते के चोंच के समान नाक, मछली के जैसी आँखे, डमरू के जैसे नारी की कमर, सिह के सामान पुरुष की कमर आदि.

6. वर्णिका भंग-

वर्ण ज्ञान और वर्णिका भंग षडंग साधना की सबसे कठोर साधना है. इसके अभाव में षडंग के पांचों अंग व्यर्थ हैं. वर्ण प्राविधि का ज्ञान चित्र को स्थाई बनाने में सहयोग देता हैवर्ण प्रभाव के आधार पर चित्र को सौंदर्य प्रधान बनाया जा सकता है.

चित्रकला के तत्व

1. रेखा (line)

भावों को चित्रात्मक रूपों में व्यक्त करने की मानवीय इच्छा ने ही रेखा को जन्म दिया है. रेखा प्रारंभ से ही चित्रकला में मूलाधार के रूप में मानी जाती है. आबाद गति से बिन्दुओं को अंकित करने से रेखा का सृजन होता है. यह कला का सरलतम, सार्वभौम तथा सबसे प्राचीन माध्यम है. अंकन के आधार पर रेखाओं को 2 भागों में बांटा जा सकता है-

(i) औपचारिक रेखा (formal lines): जो रेखाएं यंत्रों के माध्यम से खीचीं जातीं हैं, वो औपचारिक रेखाएं कहलाती हैं. इन रेखाओं का उद्देश्य उपयोगी रूपाकारों का निर्माण करना होता है.

(ii) अनौपचारिक रेखाएं (informal lines): हाथ से खिचीं गयी रेखाएं अनौपचारिक रेखाएं होती हैं. प्रभावपूर्ण रूप से खींचीं गयीं ये रेखाएं भावों की प्रतीक होती हैं. इनका प्रतीकात्मक (symbolic) महत्त्व होता है. इनके माध्यम से दूरी व निकटता को प्रकट किया जाता है. साथ रेखाओ द्वारा शाश्वतता, आकांक्षा, विश्राम, व्याकुलता, शांति, गति आदि कई भावों को प्रस्तुत किया जाता है.

बल तथा गति के अनुसार रेखाओं के प्रकार- दुर्बल, सशक्त, कोमल, कठोर, कोमल किनारों वाली रेखा, कटे कटे या टूटी हुती रेखा

रेखा व उनके प्रभाव-

1- लम्बवत रेखा (vartical lines)- आकांक्षा (Ambition)

2- क्षैतिज रेखा (horizontal lines)- विश्राम (Rest)

3- कर्ण्वत रेखा (daigonal lines)- व्याकुलता, बेचैनी (distraction)

4- कोणीय रेखा (angular lines)- असुरक्षा (insecurities)

5- एकपूंजीय रेखा (radial lines)- स्वच्छंदता (free)

6- चक्राकार रेखा (spiral lines)- निरंतरता (continuity)

7- प्रवाही रेखा (rhythmical lines)- गति (Speed)

for perspective- a- गहरी तालों से युक्त निकटता को दर्शाती हैं. हलकी रेखाएं दूरी को. b- विभिन्न कोणों वाली वस्तुओं के घनत्व और उनके विभिन्न तालों को दर्शाती हैं. c- रेखा वर्तना (line sheding)

के द्वारा वस्तुओं में उभरे व गहरे तलों को अथवा प्रकाश- छाया वाले भागों को भी स्पष्ट किया जा सकता है.

2. आकृति (form)

आकृति अथवा रूप ऐसा क्षेत्र है जिसका एक निश्चित आकार तथा वर्ण होता है. इस प्रकार रेखाओं, वर्णों व छाया प्रकाश द्वारा चित्रतल पर सभी ओर से निश्चित सीमाओं में अंकन किया जाता है वही रूप या आकृति है.

आकृति का वर्गीकरण-

(i)- नियमित/सम्मात्रिक (symmetrical form): ऐसी आकृति जिसमे दोनों भाग समान हैं, जैसे- वृत्त, आयत, त्रिकोण.

(ii)- अनियमित/असम्मात्रिक (asymmetrical form): ऐसी आकृति जिसका एक भाग दुसरे भाग के समान न हो, जैसे- केतली, वृक्ष.

आकृति के प्रभाव –

1- सरल रेखाओं से घिरी आकृति में स्थिरता व शक्ति का होती है.

2- त्रिभुजकृति से उर्ध्वमुखी गति (upward movement) व उर्जा का संकेत मिलता है.

3- वर्गाकार आकृति स्थिरता (Stability) व दृढ़ता (Perseverance) का परिचायक है. वृत्त में पूर्णता, आकर्षण, निरंतरता व गति रहती है.

4- टेढ़े मेढ़े रूप से अस्थिरता (instability), अनिश्चितता (Uncertainty), चंचलता (fickleness), व्याकुलता (distraction) आदि व्यक्त होते हैं.

3. वर्ण (colour)

चित्रकला के तत्वों में वर्ण का महत्वपूर्ण स्थान है. रेखा यदि चित्र का महत्वपूर्ण स्थान है, तो उसे रंगों के द्वारा ही पूर्णता मिलती है. वर्ण प्रकाश का गुण है.

वर्ण के तीन प्रमुख गुण होते हैं-

(i)- रंगत (hue): वर्ण का स्वाभाव रंगत है. प्रत्येक रंग अपनी रंगत से पहचाना जाता है. मुख्य तीन रंगते होती हैं- लाल, पीला, नीला. इन्ही के मिश्रण से अन्य रंगते मिलती हैं.

(ii)- मान (value): वर्ण का मान रंगत के हल्केपन व गहरेपन से प्राप्त होता है. जैसे- गहरा लाल हल्का लाल, सफ़ेद या काले रंग की मात्रा किसी भी रंग में मिलाकर एक ही रंगत के विभिन्न मान प्राप्त किये जा सकते हैं.

(iii)- सघनता (intensity/saturation): वर्ण की सघनता उसकी शुद्धता का द्योतक है. किसी भी रंग में तटस्थ अथवा धूमिल रंग (black+white= grey) मिलकर उसकी सघनता को कम किया जा सकता है.

वर्ण का वर्गीकरण-

i. प्राथमिक रंग (primary colour)

ii. द्वितीयक रंग (secondary colour)

iii. समीपवर्ती रंग (tertiary/analogous colour)

iv. पूरक या विरोधी रंग (complementary colour)

v. एकाकी रंग (monochromecolour)

vi. तटस्थ रंग (neutral colour)

गर्म रंग, ठन्डे रंग

4. तान (tone)-

रंगत के हलके व गहरेपन को तान कहते हैं. जो किसी भी वर्ण में सफ़ेद या काले रंग के मिश्रण से बनती है. सफ़ेद रंग मिलाने से जो हल्कापण प्राप्त होता है उसे हल्का बल (tint) कहते हैं और कला रंग मिलाने से जो गहरापन प्राप्त होता है उसे छाया (shade) कहते हैं.

मुख्य रूप से तीन अंग है- छाया (dark), मध्यम (middle), प्रकाश (light)

5. पोत (texture)-

किसी भी सतह या धरातल के गुण को ही पोत कहते हैं. प्रत्येक वस्तु में अंतर या पहचान उसके texture से होती है. इसकी पहचान 2 तरह से होती है – चाक्षुष, अनुभूतिजन्य.

सृजन की दृष्टी से पोत को 3 भागों में बांटा गया है-

i. प्राप्त (natural texture) प्रकृति द्वारा प्राप्त texture

ii. अनुकृत (copied texture): प्रकृति प्रदत्त पोत का अनुकरण करके निर्मित texture. ग्राफ़िक में प्रयोग

iii. सृजित (created texture): इसमें यंत्रों द्वारा अलग अलग texture निर्मित किये जाते हैं.

पोत के प्रकार- खुरदरा, चिकना, कोमल, कठोर आदि

6. अंतराल-

कला में अंतराल वह तत्व है जिससे आकृतियों की बनावट तथा स्थिति का ज्ञान होता है. रूपों का परस्पर संतुलन होता है. प्राचीन भारतीय शास्त्रों में इसके महत्त्व को बताया है. विष्णुधर्मोत्तर पूराण में 'स्थान', समरांगण सूत्रधार में 'भुमिबंधन' व अभिलशितार्थ चिंतामणि में 'स्थाननिरूपण' कहा गया है. अंतराल के लिए स्थान, अन्तरिक्ष, आकाश, शून्य आदि भी कहा जाता है.

अंतराल को मुख्यतः 2 भागों में बांटा जाता है-

i. समविभाजन (apportionment): चित्रभूमि को रेखा व आकारों के माध्यम से इस प्रकार विभाजित किया जाये की वह चारो तरफ से सामान रूप हो.

ii. असम विभाजन (odd partition): इसमें स्वतंत्रता पूर्वक विभाजन होता है.

द्विआयामी व त्रिआयामी अन्तराल (two dimensional and three dimensional or deep space)-

two dimensional: यदि चित्रभूमि में केवल लम्बाई व चौड़ाई का विचार करे तो द्विआयामी अन्तराल होगा.

three dimensional: अंतराल में गहराई का विचार करने पर त्रिआयामी अंतराल होगा. इसे हम perspectiv space भी कहते हैं.